P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-8* ISSUE-2* October- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

उत्तर मध्यकालीन हाडोती क्षेत्र के परिचय का एक अध्ययन

A Study of The Introduction of The North Medieval Hadoti Region

Paper Submission: 15/10/2020, Date of Acceptance: 26/10/2020, Date of Publication: 27/10/2020

दीपिका कुमारी
शोधार्थी,
इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

भोगोलिक वातावरण किसी भी संस्कृति का नियामक होता है और संस्कृति से ही समाज कि रचना होती है, और समाज को द्रष्टिपात करके हम सामाजिक जीवन का आकलन करते है चुकि वर्तमान,भूत और भविष्य का नियता भूगोल है अतएव हाड़ोती संभाग कि भोगोलिक स्थिति को जानना विस्तृत रूप से आवश्यक है। सत्य यह है कि 18 वीं सदी में भोगोलिक सम्पन्ता इतनी थी कि चारो और संतुष्टि का माहोल था, यह शोधपत्र मध्यकालीन हाडोती क्षेत्र के परिचय पर प्रकाश डालता है इस शोधपत्र हेतु अपनायी गयी शोध विधि के अंतर्गत राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर, हाडोती संबधित साहित्य, बस्तों व बहियों से हाडोती क्षेत्र के परिचयात्मकता का पता चलता है।

The geographical environment is the regulator of any culture and culture is the creation of society, and by observing the society, we assess social life because the geography of present, past and future is geography, so to know the geographical position of the Hadoti division. Form is necessary. The truth is that in the 18th century the geographical wealth was so much that there was an atmosphere of satisfaction and satisfaction, this paper sheds light on the introduction of medieval Hadoti region. Under the research method adopted for this paper, Rajasthan State Archives Bikaner, Hadoti related literature, settlements And the books reveal the familiarity of Hadoti region.

मुख्य शब्द : नियता, बहिया, परिचयात्मकता, नियामक आकलन।
Determinism, Bahia, Introductory, Regulatory Assessment.

प्रस्तावना

18 वीं शताब्दी की प्रगतिशील आर्थिक स्थिति का नियता जहा भूगोल है, वही मुगल पतन भी इस परिपेक्ष्य में वरदान साबित हुआ, हाडोती क्षेत्र के तथाकथित व्यापारियों को व्यापारिक स्वतंत्रता मिल गई थी, यंहा तक कि विभिन्न व्यापारियों को राज्यों कि ओर से परवाने जारी कर हवेलिया, भूमि आदि मुक्त दी गई थी,अपने क्षेत्र में स्थायी व्यापार करते रहने के एवज में उन्हें न केवल करो में वरन पूर्ण छुट भी दी गई थी।

कोटा रियासत का क्षेत्रफल लगभग 2200 वर्ग मील था और कोटा विरासत अथार्त वर्तमान कोटा एवं झालावाड़ जिलो का संयुक्त क्षेत्रफल लगभग 6, 4 व 4 वर्ग मील था। हाडोती क्षेत्र का सयुंक्त रूप से रियासती कल का क्षेत्रफल लगभग 8714 वर्गमील था, राजस्थान के मानचित्र में दक्षिण दृपूर्वी कोने में हाडोती कि स्थिति विषम कोण चतुर्भुज के समान अलग ही नजर आती है। इस क्षेत्र में वर्तमान में कोटा बूंदी, बारां, झालावाड जिले है।

शोध–क्षेत्र

इस शोध अध्ययन में हाडोती क्षेत्र को चयनित किया है। यह क्षेत्र राजस्थान में विषम कोण चतुर्भुज कि स्थिति लिए हुए है – इसमें कोटा बूंदी, बारां, झालावाड़ जिले सम्मिलित है।

साहित्यावलोकन

1. अरविन्द सक्सेना – बूंदी राज्य का इतिहास {1994} इस पुस्तक में बूंदी के भोगोलिक व राजनितिक इतिहास का वर्णन किया गया है।
2. गोपीनाथ शर्मा – राजस्थान का इतिहास (2001)

3. इस पुस्तक में राजस्थान का इतिहास ओ हाडोती क्षेत्र कि स्थिति का वर्णन है।
4. मथुरालाल शर्मा – कोटा राज्य का इतिहास {1940} भाग –1 भाग–2 } कोटा राज्य का इतिहास उल्लेखित है जो हाडोती से सम्बंधित स्थिति को दर्शाता है।
5. एस. आर. खान – हाडोती के बोलते शिलालेख {1998} दृइसमें हाडोती के सामाजिक, सांस्क्रति,राजनितिक विशेषताओं कि समीक्षा शिलालेख पर उत्कीर्ण है।
6. डा. अनुकृति उज्जैनिया– हाडोती की जल संस्कृति {2020} वर्तमान युग के जल सरंक्षण की नवीन तकनीको ने पुरातन जल विरासत को दर किनार कर दिया है और हाडोती क्षेत्र कि जानकारी मिलती है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. हाडोती क्षेत्र का अध्ययन।
2. कोटा, बूंदी, बारां, झालावाड़ कि सैन्य व्यवस्था का अध्ययन।

कोटा राज्य

कोटा का नाम भीलो की कोटिया शाखा के नाम पर पड़ा, कोटा जिला राजस्थान के दक्षिण दृपूर्वी भाग में 24′ 25 से 25 ′ 51 उतरी अक्षांशो तथा 75 ′37 से 76′ 26 दक्षिण अक्षांशो के मध्य स्थित है। जिले का कुल क्षेत्रफल 5481 वर्ग किलोमीटर है जो प्रदेश के क्षेत्रफल का 1.68 प्रतिशत है। कोटा जिले की उतर दृपश्चिमी सीमा पर बहने वाली चम्बल नदी इस जिले को सवाई माधोपुर टोंक तथा बूंदी जिलो से अलग करती है। चम्बल के अतिरिक्त कालिसिंध, पारबती,परवन, अँधेरी,बाणगंगा, उजाड़,सुकड़ी,कुल और कुन्नो आदि छोटी दृबड़ी नदियों का जाल पुरे जिले में फैला हुआ है।जिले में 937 गाँव तथा 4 नगर स्थित है। कोटा नगर में गढ, दाद देवी का मंदिर, कसुआ मंदिर .शिव मंदिर तथा भिटारिया कुंड दर्शनीय है। यंहा का दशहरा उत्सव पूरी दुनिया में प्रसिद है, कैथून गाँव से बनकर आने वाली डोरिया साड़ीया कोटा डोरिया के नाम से बिकती है।

बूंदी

बूंदी का नाम बूंदी के अंतिम मीणा राजा जेता के दादा बंदु के नाम पर रखा गया है। बूंदी जिला राजस्थान के दक्षिण दृपूर्वी में 24′ 59 11′ से 25′ 53′11 ′उतरी अक्षांसो के बीच तथा 75 19′ 30′′ से 76′ 19′ 30′′ पूर्वी देशान्तरो के बीच स्थित है।

इसका कुल क्षेत्रफल 5,550 वर्ग किलोमीटर है, इसकी दक्षिण तथा पूर्वी सीमाओं का निर्माण चम्बल नदी करती है जो कोटा व बूंदी जिलो कि सीमा पर स्थित है। बूंदी का राजमहल, रानीजी कि बावड़ी, चोरासी खम्बो कि छतरी, जैतसागर, नवलसागर, डाबलाना, दुगारी, हिंडोली, केशवराय पाल, लाखेरी, नैनवा, तालेडा, तालवास, तारागढ़ का दुर्ग आदि पर्यटकों को प्रमुख रूप से आकर्षित करते है।

झालावाड

इसवी 1791 में कोटा राज्य से सेनापति झाला जालिम सिंह प्रथम ने झालावाड नगर बसाया जो देश कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद झालावाड नामक जिले का मुख्यालय बना। मालवा पठार के किनारे स्थित यह जिला विन्ध्याचल पर्वतमाला से घीरा हुआ है। झालावाड़ जिले का कुल क्षेत्रफल 6219 वर्ग किलोमीटर है।

सैन्य व्यवस्था

राज्य का बहुत सा हिस्सा छोटी–छोटी जागीरो में बंटा हुआ था, सीमांत व्यवस्था बाह्य आक्रमणों से सुरक्षा हेतु कुशल सैन्य व्यवस्था का गठन किया था।

माधो सिंह जी के राजकाल में कुल 43 परगने थे, माधो सिंह जी पंच हजारी थे इसके अतिरिक्त अपने देस कि रक्षा करने के लिए उनके पास अलग सेना थी, सेना से प्रत्येक अंग का प्रबंध एक अफसर को सुपुर्द था। फीलखाना शुतुरखाना आदि सेना के अंग थे, सेना के ऊपर कितना खर्च होता था इसका अनुमान इस बात से हो सकता है कि प्राय रू प्रत्येक हाथी दो सेर घी तीन सेर गुड तथा पैंतीस सेर आटा रोजाना दिया जाता था।

माधो सिंह जी ने अपने बाहुबल से व सैनिक नीति से युद्ध में योग्यता प्राप्त की थी, वीरता का परिचय देकर "होनहार बिरवान के हॉट चीकने पात" को चरितार्थ किया।

राव मुकुंद सिंह

सेना का व्यापक नाम तोपखाना था, कोटा रक्षा के लिए सेना इस फोज को खास रिसाला कहा जाता था इस सेना में खास व विश्वशनीय व्यक्तियों को भर्ती किया जाता था, खास रिसालो में पैदल सवार, गोलंदाज आदि सब सम्मिलित थे। सबसे बड़ी और मुख्य पलान गोरधन पलान थी कवायड वर्दी शस्त्र सब आधुनिक प्रकार के थे।

निष्कर्ष

1. 18 वी सदी में भोगोलिक सम्पनता थी इस वातावरण ने निवासियों को उच्च संस्कृति कि ओर सदा प्रवृत रखा।
2. कोटा राज्य में नदियों का जाल फैला हुआ है। यंहा का दशहरा उत्सव पूरी दुनिया में प्रसिद है जो स्वयं में अनूठा स्थान रखता था।
3. बूंदी राज्य में दुर्ग दृबावड़ी पर्यटकों को प्रमुख रूप से आकर्षित करते है।
4. हाडोती कि श्रेष्ठ व कुशल सैन्य व्यवस्था के कारण वह मुगल आकंताओं के कठोर प्रभाव से अछूतों रहे।
5. व्यापारियों कि स्थिति को सुदृढ बनाने में भोगोलिक परिस्थिति का राजस्थान में महतवपूर्ण योगदान रहा, राजस्थान सभी का केन्द्रीय स्थल बन गया था,यंहा सभी कार्य कुशल सैन्य वयवस्था से ही संपन होते है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *एम एल शर्मा कोटा राज्य का इतिहास भाग –234 340*
2. *एम् एल शर्मा कोटा राज्य का इतिहास भाग – II 344*
3. *भंडार नं 4 बस्ता नं 1 जकात बही कस्बा नंदगाँव (कोटा) वि. स. 1827 –30 { 1770 –73}*
4. *भंडार नं 4 बस्ता न 1 जकात बही, कस्बा कनवास वि. स.– 1833–36 {1777–79}*
5. *भंडार न 4 बस्ता न 2 जकातबही परगना जहाजपुर वि. स. 1871 {1844 }*
6. *भंडार न 14 बस्ता न 51 जमाबंदी बही, वि. स. 1849 {1792}*
7. *भंडार न 14 बस्ता न 56 जमाबंदी बही वि. स. 1852 {1795}*